IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावक अपेक्षाओं, लिंग एवं संकाय का उनके उपलब्धि अभिप्रेरणा पर प्रभाव

डॉ. मंजू साहू
सह प्राध्यापक
भारती विश्वविद्यालय, पुलगांव दुर्ग (छ.ग.)

डॉ. के. नागमणी
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा)
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भिलाई नगर (छ.ग.)

सारांश :—शोधकर्ता के शोध अध्ययन का मुख्य यही उद्देश्य है कि विद्यार्थियों के अभिभावक की अपेक्षाएँ, लिंग, संकाय बालकों के उपलब्धि अभिप्रेरणा को किस हद तक प्रभावित करती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के लिए 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिसमें कक्षा 11 वीं के कला एवं विज्ञान विषय के छात्र—छात्राओं को शामिल किया गया। न्यादर्श चयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया है। सांख्यिकी विश्लेषण के लिए2x2x2 कारक विश्लेषण का प्रयोग किया गया है। शोध अध्ययन के परिणाम में यह पाया गया कि विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा पर अभिभावक अपेक्षाएँ एवं संकाय का मुख्य सार्थक प्रभाव पाया गया।

भूमिका:—शिक्षा का उद्देश्य बालक को उसकी योग्यताओं एवं क्षमताओं के अनुसार उचित उपलब्धि को प्राप्त करना होता है। शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने का महत्वपूर्ण साधन परिवार है। परिवार में बालक सुख,सहानुभूति और अनुकरण के माध्यम से सीखता है और परिवार अनौपचारिक शिक्षा का महत्वपूर्ण साधन भी है। परिवार में बच्चों को अपने अभिभावकों के द्वारा प्रोत्साहन, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा मिलती है, जिसका प्रभाव उनके उपलब्धि पर पड़ता है, परंतु इसके विपरीत अभिभावक की उच्च अपेक्षाएँ बालक के उपलब्धि अभिप्रेरणा पर विपरीत प्रभाव डालती है। बालक अपनी रूचि के अनुसार अपने विषय क्षेत्र में अधिक प्रयास एवं

परिश्रम करना चाहता है, जिससे वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। बालक का प्रथम गुरु उनके माता–पिता ही होते हैं प्रारंभिक शिक्षा बालक को माता–पिता के द्वारा ही दी जाती है। जो बालक के ज्ञान में वृद्धि करती हं और उपलब्धि स्तर को बढ़ाती है। आधुनिक शिक्षा विद्यार्थियों को कुशल डॉक्टर, इंजीनियर या अफसर तो बना देती है परंतु एक अच्छा चरित्रवान इंसान बनने के लिए माता–पिता के संस्कार पर निर्भर करता है। एक पक्षी को उड़ान भरने के लिए जिस प्रकार दो सशक्त पंखों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार बालक को उच्च लक्ष्य प्राप्त करने के लिए औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता होती है जिसे घर और विद्यालय द्वारा पूर्ण किया जा सकता है।

अभिभावक अपेक्षाऐं :–शिक्षा के क्षेत्र में उच्च अपेक्षाऐं उच्च शैक्षिक उपलब्धि का निर्धारण करती है। अपेक्षाऐं विद्यार्थियों की उपलब्धि को या तो बढ़ा देती है या घटा देती है। अभिभावक की अपेक्षाओं का बच्चों की प्रेरणा एवं इच्छा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। एक वास्तविक अपेक्षा बच्चों की उपलब्धि को बढ़ाती और सफलता दिलाती है। अभिभावक की अपेक्षाओं का बच्चों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बालक एवं बालिकाओं की योग्यताओं के अनुसार की जाने वाली अपेक्षाएँ बच्चों की उपलब्धि और सफलता को बनाती है अभिभावक को अपने बच्चों पर कभी अपनी इच्छाऐं थोपनी नहीं चाहिये, उनकी रूचि का आंकलन कर उसे लक्ष्य प्राप्ति में सहयोग करना चाहिय बालक किसी विषय में रूचि लेता है तब वह उस विषय के लिये प्रयास करताहै। तत्पश्चात् उसे उपलब्धि प्राप्त होती है, परंतु यदि उसकी रूचि एवं योग्यताओं कोध्यान न रखते हुए, अपनी इच्छाओं एवं अपेक्षाओं को उन पर थोपा जाता है तोउनका उपलब्धि अभिप्रेरणा प्रभावित होता है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा :–उपलब्धि अभिप्रेरणा एक ऐसा अभिप्रेरणा है, जिससे अभिप्रेरित होकर बालक इस ढंग से कार्य करता है कि उसे अधिक सफलता मिल सके। शिक्षा में उपलब्धि अभिप्रेरणा बालक को सीखने के लिये जिज्ञासु बनातो है। अभिप्रेरणा उपलब्धि को प्राप्त करने की आकांक्षा तथा उद्देश्य का मार्ग प्रशस्त करती है। अभिप्रेरणा बालक को लक्ष्य पाने के लिये प्रोत्साहित करता है। जब बालक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये जो कार्य करता है, यह कार्य करने की योग्यता किसी में कम या ज्यादा होती है, यह बालक का उपलब्धि स्तर होता है। आंतरिक प्रेरणा ही वास्तविक प्रेरणा होती है जिसके द्वारा व्यक्ति क्रियाशील रहकर अपने उद्देश्य प्राप्ति में लगा रहता है। अभिप्रेरणा बालक को निश्चित रूप से कार्य करने की प्रेरणा देती है। उच्च उपलब्धि की प्राप्ति में अभिप्रेरणा अहम भूमिका निभाती ह। शिक्षा के क्षेत्र में बालक की सफलता प्राप्ति में उपलब्धि अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह एक ऐसी

प्रेरक शक्ति है जिसका संबंध उन्नति से है, जो बालक को उसकी रूचि के अनुसार चयनित क्षेत्रों में सफलता हासिल करने में सहायता करती है। उपलब्धि अभिप्रेरणा मुख्यतः शैक्षिक अभिप्रेरणा है जिससे प्रेरित होकर व्यक्ति इस तरीके से कार्य करता है कि वह अपनी उपलब्धि को प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

संबंधित अध्ययनों की समीक्षा :–

अभिभावक अपेक्षाऐं

फेन(2001)ने यह पाया कि यदि अभिभावक अपेक्षाऐं सकारात्मक होती है तो कक्षा 8वीं से 12वीं के विद्यार्थियों की गणित, विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन में उपलब्धि भी अधिक होती है।

एंडरसनचाइल्ड ट्रैंड (2015)ने परिणाम में पाया गया कि अभिभावक अपने बच्चों से अच्छे प्रदर्शन की अपेक्षा रखतेहैं। समस्या तब उत्पन्न होती है जब बच्चे अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिये स्वयं पर दबाव महसूस करने लगते हैं।

गेवरत्ज(2015)ने पाया कि अभिभावकों की उच्च अपेक्षाऐं विद्यार्थियों को नुकसान पहुँचा सकती है। यदि अभिभावक अपेक्षाऐं अधिक होती हैं तो वह बच्चों की उपलब्धि और प्रतिभा पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

आलम (2001) ने परिणाम में पाया कि उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक सकारात्मक संबंध पाया गया।

कुकरेती एवं उनियाल (2005)ने परिणाम में पाया कि उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की पारिवारिक अभिप्रेरणा तथा सामाजिक अभिप्रेरणा निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पायी गयी।

शेखर एवं देवी (2012)के परिणाम यह दशाते हैं कि विज्ञान एवं कला विषय के विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर पाया गया।

देसवाल एवं रानी (2012)ने परिणाम में पाया कि अनाथ किशारों की अपेक्षा अभिभावक युक्त किशोरों की उपलब्धि अभिप्रेरणा उच्च स्तर की पाई गयी।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा पर अभिभावक अपेक्षाओं, लिंग व संकाय के मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

H_{01} उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावक अपेक्षाओं, लिंग एवं संकाय का उनक उपलब्धि अभिप्रेरणा पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन की परिसीमाएँ

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।.
2. प्रस्तुत शोध में कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
3. न्यादर्श के लिए छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया।
4. अध्ययन क्षेत्र के लिए छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग, राजनांदगाँव एवं बालोद जिला का चयन किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अभिभावक अपेक्षाएँ को मापने के लिए स्व–निर्मित उपकरण मापनी तथा उपलब्धि अभिप्रेरणा को मापने हेतु डॉ. बीना शाह द्वारा निर्मित परीक्षण का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी में कक्षा 11वीं के 600 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया जिसमें कला एवं विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं का चयन किया गया।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है। वर्णनात्मक शोध के अंतर्गत् सर्वेक्षणविधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श चयन के लिये स्तरीकृत गैर आनुपातिक न्यादर्श प्रविधि का उपयोग कियागया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण :–अंतःक्रियात्मक परिकल्पनाओं की जाँच हेतु 2x2x2कारक विश्लेषणसांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष एवं विश्लषण :–

H_{01} उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावक अपेक्षाओं, लिंग एवंसंकाय का उनके कुल उपलब्धि अभिप्रेरणा पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभावसार्थक नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक –1

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावक अपेक्षाएँ, लिंग व संकाय केस्वतंत्र एवं संयुक्त प्रभावों के संदर्भ में प्रसरण विश्लेषण का सारांश

प्रसरण का स्त्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता की कोटि	मध्यमान वर्ग	Fअनुपात
अभिभावक अपेक्षाएँ	1130.350	1	1130.350	8.904**
लिंग	10.720	1	10.720	0.084 NS
संकाय	1305.968	1	1305.968	10.287**
अभिभावक अपेक्षाएँ गलिंग	46.358	1	46.358	0.365 NS
अभिभावक अपेक्षाएँ गसंकाय	62.902	1	62.902	0.495 NS
लिंग गसंकाय	102.411	1	102.411	0.807 NS
अभिभावक अपेक्षाएँ गलिंगगसंकाय	275.489	1	275.489	2.170 NS
त्रुटि	59160.679	466	126.954	
संशोधित योग	62302.036	473		
** = 0.01सार्थकता स्तर,' = 0.05सार्थकता स्तर, NS =सार्थक नहीं				

स्वतंत्र प्रभाव

अभिभावक अपेक्षाएँ

तालिका क्रमांक 1 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की अभिभावक अपेक्षाओं का उपलब्धि अभिप्रेरणा पर मुख्य प्रभाव के लिये एफ मान F =8.904,स्वतंत्रता की कोटि (df = 1, 466)में 0.01स्तर पर सार्थक है क्योंकि यह मान सारणी मान 6.63से अधिक है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिकविद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावक अपेक्षाओं का उपलब्धि अभिप्रेरणा पर स्वतंत्रप्रभाव सार्थक पाया गया। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

तालिका क्रमांक –1(a)
विद्यार्थियों के अभिभावक अपेक्षाओं के आधार पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का मध्यमान मूल्य एवं प्रमाणिक विचलन

अभिभावक अपेक्षाएँ	Nसंख्या	मध्यमान मूल्य	प्रमाणिक विचलन
निम्न	241	96.05	13.427
उच्च	233	99.48	8.720

तालिका क्रमांक –1(a)से स्पष्ट होता है कि उच्च अभिभावक अपेक्षा वाले विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा का मध्यमान (M = 99.48)तथा निम्न अभिभावक अपेक्षाएँ वाले विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा का मध्यमान (M = 96.05)है। अर्थात् उच्च अभिभावक अपेक्षा वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा निम्न अभिभावक अपेक्षा वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा श्रेष्ठ है। अतः उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा में अभिभावक अपेक्षा के आधार पर अंतर पाया जाता है, जिसका तात्पर्य है कि विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर अभिभावक अपेक्षा का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

संकाय

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 1 के परिणाम यह दर्शाते हैं कि विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा को संकाय सार्थक रूप से प्रभावित करता है क्योंकि इस कारक के लिये प्राप्त एफ मान F = 10.287है जो कि स्वतंत्रता की कोटि (df = 1, 466)पर 0.01स्तर पर सार्थक है जो कि सारणी मान 6.63से अधिक ह। इसस यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में उत्पन्न विचलनता में संकाय के विभिन्न स्तरों का सार्थक योगदान है। अर्थात् कला एवं विज्ञान के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक भिन्नता दृष्टिगोचरित होती है, अतः परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्राप्तांकों पर संकाय का स्वतंत्र प्रभाव सार्थक नहीं पाया जायेगा, अस्वीकृत होती है।

तालिका क्रमांक –1(b)
विद्यार्थियों के संकाय के आधार पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का मध्यमान मूल्य एवंप्रमाणिक विचलन

संकाय	Nसंख्या	मध्यमान मूल्य	प्रमाणिक विचलन
कला	245	96.03	10.720
विज्ञान	229	99.56	11.991

तालिका क्रमांक 1(b)से स्पष्ट होता है कि कला विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का मध्यमान(M = 96.03)तथा विज्ञान विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का मध्यमान (M = 99.56)है। अर्थात् विज्ञान विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा कला विद्यार्थियां की उपलब्धि अभिप्रेरणा से उत्कृष्ट श्रेणी की है। अतः उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में संकाय के आधार पर अंतर पाया जाता है, जिसका तात्पर्य है कि विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर संकाय का सार्थक प्रभाव पड़ता है। इन मुख्य प्रभाव के अलावा विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा पर लिंग, अभिभावक अपेक्षाएँxलिंग, अभिभावक अपेक्षाएँ x संकाय, लिंग x संकाय, अभिभावक अपेक्षाएँ x लिंग x संकाय का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

शैक्षिक उपादेयता

शोध अध्ययन के परिणाम के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि बालक को परिवार में ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए, जिससे बालक की उपलब्धि अभिप्रेरणा का विकास हो सके। बालक के बौद्धिक तथा कलात्मक गुणों म वृद्धि करनी चाहिए। परिवार ही एक ऐसा स्थान है, जहाँ बालक की शैक्षिक उपलब्धि का विकास संभव हो पाता हैं, इसलिए अभिभावक को उचित वातावरण प्रदान करके बालक के उपलब्धि अभिप्रेरणा में वृद्धि करनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Alam (2001). Academic achievement in relation to socio economics status,anxiety level and achievement motivation. Shodh Ganga,inflibnet.qe.in/boststreamio603/7060107pdf by Panny, 2011.
- Anderson, J. (2015). Parents: Your absurdly high expectations are harming your children achievement. https://QZ.com
- Child Trends (2015). The impact of expectations and home and neighbourhood influences on education goals. http://smhp.psych.ucla.edu send comments to haylor@ucla.edu.
- Kukreti, B. R. & Uniyal, N. P. (2005). Impact of social motivation on scholasticachievement of higher education students. An Investigation, RecentResearches in Education and Psychology, 10(1 & 2), 39 – 41.
- Shekhar, C. & Devi, R. (2012). Achievement motivation across gender anddifferent academic majors. Journal of Educational and Developmental87 Psychology, Published by Canadian Center of Science & Education, 2(2),105 – 108.
- Fan, X. (2001). Parental involvement and students' academic achievement: Agrowth modeling analysis. Journal of Experimental Education, 70(1), 27 –61.
- Gewertz, C. (2015). Parental expectation that are too high can harm students.
- study says.mobile.edweek.org>c.jsp>blogs

- देसवाल, वाई एवं रानी, आर. (2012)-अभिभावक युक्त किशोरों एवं अनाथ किशोरों कीउपलब्धि अभिप्रेरणा पर अध्ययन। जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजिकल रिसर्च , 2(1),63 – 73
- ls://education.mirror.orgबच्चों के विकास में शिक्षक और अभिभावक की भूमिका
- सिंह, अरूण कुमार (2018). शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन पब्लिर्शस एंड डिस्ट्रब्यूटर्स, चतुर्थसंस्करण,267 - 274.
- https://woi.jiv.org>wol>1p-hiमाता–पिता की भूमिका